असर का जन्म[1]

#fDe.kh cuh

मुझे उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के एक गाँव में करीब दस साल पहले, ग्रीष्मकाल के एक गर्म दिन की याद है। हम लोग[2] एक ग्राम रिपोर्ट कार्ड तैयार कर रहे थे। किसी गाँव में काम शुरू करने से पहले हम लोग हमेशा यह कार्य करते थे। हमारा लक्ष्य था, और आज भी है, गाँव के लोगों के साथ काम करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि "प्रत्येक बच्चा स्कूल में है और अच्छे से सीख रहा है"। तो हम गाँव के हर घर में जाते और हरेक बच्चे से पूछते कि वह स्कूल जाता है या नहीं। दस साल पहले, उप्र तक में स्कूल नामांकनों का स्तर काफी ऊँचा था। कुछ गाँवों में तो छह से चौदह साल की उम्र के बच्चों में से 90 प्रतिशत से भी काफी ज्यादा बच्चे स्कूलों में नामांकित थे। लेकिन हमारे लिए, स्कूली शिक्षा के पार जाना जरूरी था और यह जानने की कोशिश करना था कि बच्चा क्या कर सकता था। वे क्या सीख चुके हैं इसका अन्दाजा लगाने के लिए हमने काफी बुनियादी मानदण्डों का इस्तेमाल किया - गाँव में प्राथमिक स्कूल की उम्र वाले प्रत्येक बच्चे से आम शब्दों और सरल पैराग्राफों को पढ़ने के लिए कहा। अंकगणित में संख्याओं को बोलकर पढ़ना था और सरल अंकगणितीय सवाल करना थे।

उस सुबह सुलतानपुर गाँव में, हम प्रधान (गाँव के मुखिया) के पास उन्हें यह जानकारी देने गए कि हम क्या करने जा रहे थे। प्रधान ने हमें सरसरी निगाह से देखा और कहा, "अच्छा... सर्वे है? करिये, करिये!" अनगिनत सर्वेक्षणों के आदी हो जाने के कारण उन्हें यह जानने तक की दिलचस्पी नहीं थी कि सर्वेक्षण था किस बारे में।

कई अन्य गाँवों की तरह इस गाँव में भी हम एक पुरवे से दूसरे पुरवे जाते रहे, व्यवस्थित ढंग से एक-एक घर में, पालकों से बात की, बच्चों से अकेले में बातें की। इस तरह के सवालों जैसे "क्या आपके बच्चे स्कूल जाते हैं?" के त्वरित और कभी-कभी उदासीन उत्तर मिले।

पर बच्चों से पढ़ने के लिए कहने पर सभी का ध्यान गया। बच्चे हमारे आसपास इकट्ठा हो जाते और पढ़ने की कोशिश करना चाहते। उनके माता-पिता काम करना छोड़कर उन्हें ऐसा करता हुआ देखने के लिए आ जाते। खेतों में खेलने वाले बच्चे पढ़ने के लिए आने से पहले कमीजें पहन लेते। बच्चे गाँव में जहाँ भी होते थे वहाँ से उनके माता-पिता उन्हें वापस बुला लेते थे ताकि उनकी 'परीक्षा' ली जा सके। बच्चे पेड़ों से नीचे आते जहाँ वे आम खा रहे होते थे। गाँव के तालाब में से यह देखने के लिए निकलकर आते कि वहाँ क्या चल रहा था। देखने वाले और निरीक्षण कर रहे लोग हमसे "जाँच उपकरण" उधार लेते और खुद बच्चों के साथ काम करना शुरू कर देते। एक दादी अम्माँ उन पैराग्राफों को लेकर एक कोने में बैठ गईं और उन शब्दों का उच्चारण करने लगीं यह देखने के लिए कि उन्हें उनके अक्षर और मात्राएँ याद थीं या नहीं। पुरवे दर पुरवे होती गई यह प्रक्रिया अचानक आँकड़े एकत्रित करने के "सर्वेक्षण" से रूपान्तरित होकर एक बहुत बड़ी दिलचस्प प्रक्रिया में बदल गई। सभी को एकदम से यह जानना था कि बच्चे कैसा कर रहे थे। हमारा लक्ष्य गाँव के हर बच्चे के पास पहुँचना था ताकि स्कूली शिक्षा और बच्चों के सीखने पर आधारित ग्राम रिपोर्ट कार्ड एक पूर्ण जनगणना और प्रारम्भिक बिन्दु बन जाए।

सबकी जिज्ञासा अपरिमित थी। जो चीज बहुत ज्यादा आश्चर्यजनक थी वह यह कि कई माता-पिताओं को यह अन्दाजा भी नहीं था कि उनके बच्चे पढ़ सकते थे या नहीं, अंकगणित कर सकते थे या नहीं। ऐसा निरक्षर

और साक्षर, दोनों तरह के पालकों के साथ था। वे युवा लोग जो इन प्रक्रियाओं को रुचि लेकर देख रहे थे मदद के लिए आगे आए।

जब बच्चे पढ़ रहे होते या अंकगणित कर रहे होते, तब बड़े लोग इस बात की बड़ी गहनता के साथ चर्चा करने में जुट जाते कि बच्चों को जो कुछ भी करने के लिए कहा जा रहा था वे उसे क्यों कर पा रहे थे या क्यों नहीं कर पा रहे थे तथा इसके पीछे किसका दोष था। यह ऐसा था जैसे बहसें और चर्चाएँ दो तलों पर एक साथ चल रही हों - एक बच्चों के तल पर और दूसरी, इससे ऊपर, बड़ों के तल पर।

मुझे याद है कि एक वृद्ध महिला ने अपना सिर हिलाते हुए कहा था, "यह कोई सर्वेक्षण नहीं है", "क्यों नहीं?" मैंने उससे पूछा था। उसने मुझे सर्वेक्षण की जो परिभाषा बताई उतनी अच्छी परिभाषा मैंने कभी नहीं सुनी थी। उसने कहा, "सर्वेक्षण वह होता है जिसमें आपको जानकारी नहीं होती, लेकिन हमें है। सर्वेक्षण वह होता है जिसमें आप शहर से आते हो यह जानने के लिए कि हम गाँव वाले आखिर हैं क्या। पर यह कोई सर्वेक्षण नहीं है। क्योंकि आपको भी नहीं पता और हमें भी नहीं पता, बल्कि बच्चों को भी नहीं पता कि वे क्या कर सकते हैं। केवल जब आप उनसे कुछ पढ़ने के लिए या जोड़ करने के लिए कहते हैं, तभी जाकर हमें भी इस बारे में पता चलता है। हमें एक साथ पता चलता है और एहसास होता है कि हमारी असलियत क्या है।"

जब पुरवे की घर-घर और बच्चे-बच्चे वाली प्रक्रिया पूरी हो गई, तो पुरवे के "नतीजों" की घोषणा की गई। लोग रूकी हुई सांसों के साथ "गिनती" का इन्तजार कर रहे थे। "यहाँ 40 परिवार हैं और उनमें 75 बच्चे हैं। 70 बच्चे स्कूल जाते हैं पर उनमें से सिर्फ 35 ही ऐसे हैं जो पढ़ सकते हैं या जोड़ कर सकते हैं।" इन नतीजों को हजम करने के साथ ही साथ इस पर भी गम्भीर चर्चा चल रही थी कि कैसे यह ठीक बात नहीं है और चीजों को बेहतर करने के लिए क्या किया जा सकता था। साफतौर पर, स्थिति पर ध्यान न देने से चीजें अपने आप ठीक नहीं हो जाएँगी। तुरन्त और जल्द क्रियाशीलता की जरूरत थी। पुरवे दर पुरवे में, लोग इस बारे में एक राय थे कि स्कूलों को अपना काम अच्छे से करना चाहिए, शिक्षकों को प्रभावशाली ढंग से पढ़ाना चाहिए और यह कि माता-पिता को या घर पर किसी और को या फिर पड़ोस में से भी किसी को बच्चों की मदद करना जरूरी था। तभी बच्चों के सीखने में बदलाव शुरू होगा।

पीछे मुड़कर, और इस तरह विकसित हुए उस दृश्य पर सिलसिलेवार ढंग से नजर डालते हुए, आप बहुत स्पष्टता से देख सकते हैं कि इस जानकारी को पैदा करने वाली वास्तविक गतिविधि इस पूरी प्रक्रिया के सामने आने के लिए बहुत जरूरी थी। "आत्म खोज" बहुत जरूरी थी। किसी को तो आईना उठाने की जरूरत थी ताकि लोग उसमें खुद को देख सकते। जानकारी बहुत अहम थी। वह अहम थी क्योंकि वह उन बच्चों के बारे में थी जिन्हें सभी जानते थे और उनकी परवाह करते थे। वह अहम थी क्योंकि जो जानकारी बाहर निकलकर आई वह नई थी। उसके पहले, उन लोगों ने बच्चों के सीखने को इतने ध्यान से समझना नहीं जाना था और उन्हें नहीं पता था कि इस सरल से ढंग से भी इस ओर ध्यान दिया जा सकता था। इसका महत्त्व इसलिए था क्योंकि लोगों ने जानकारी को अपनी आँखों के सामने पैदा होते देखा था और कई बार तो इसे निर्मित करने की प्रक्रिया में हिस्सा भी लिया था। इस उपकरण और इस पद्धति की सरलता ने सभी प्रकार के लोगों को इस प्रक्रिया में भागीदारी करने का या कम से कम उसका अवलोकन करने का मौका दिया। और परिणामों को हजम करना आसान था - उनके अपने बच्चों के लिए भी और पड़ोस के सारे बच्चों के लिए भी, व्यक्तियों के लिए भी और समूह के लिए भी। लोग साक्षर थे या निरक्षर, यह सबको बहुत साफ था कि उनके स्कूल जाते बच्चों को ये सब बुनियादी कार्य करना आना चाहिए।

कुछ दिन में ग्राम रिपोर्ट कार्ड तैयार हो गया। हम प्रधान के पास वापस गए। वे जो काम कर रहे थे उससे नजर हटाए बगैर उन्होंने मुझसे पूछा कि कहाँ हस्ताक्षर करना है? रिपोर्ट कार्ड में ऐसी कोई जगह नहीं थी

जहाँ हस्ताक्षरों की जरूरत हो। प्रधान जी को यह बहुत अजीब बात लगी। उन्होंने मेरी तरफ देखा और बोले, "आमतौर पर आँकड़ों और संख्याओं को इकट्ठा किया जाता है क्योंकि हमें उन्हें और ऊपर के स्तर पर भेजना होता है और उसके लिए मुझे अपने हस्ताक्षर करना जरूरी होते हैं।" मैंने समझाने की कोशिश की रिपोर्ट कार्ड की प्रक्रिया से क्या नतीजे निकलकर आए हैं। मेरे समझाने के बाद उन्होंने जोर से कहा, "ये आँकड़े जरूर गलत हैं। ऐसा कैसे हो सकता है कि बच्चे स्कूल जा रहे हैं और फिर भी उन्हें पढ़ना न आता हो?" उन संख्याओं और मेरे समझाने ने उन्हें खफा कर दिया था। ये आँकड़े गाँव के यथार्थ के बारे में उनके दृष्टिकोणों और मान्यताओं के विपरीत थे।

अब प्रधान जी का पूरा ध्यान हमारी तरफ था। इस मुद्दे को हल करने का हमारे पास अब सिर्फ एक तरीका था। पाठन के उपकरण को लेकर प्रधान जी गाँव में घूमते फिरे। हर वह बच्चा जो उन्हें मिला, उससे पढ़ने के लिए कहा गया। दसवाँ बच्चा आते-आते प्रधान जी सिर पकड़कर बैठ गए और बोले, "यह तो मेरी इज्जत का सवाल है। मेरे गाँव के बच्चों की यह स्थिति कैसे हो सकती है और मुझे इसके बारे में पता ही नहीं?" तुरन्त ही उन्होंने गाँव की एक सभा बुलाई जिसमें बच्चों के माता-पिता, शिक्षक, बच्चे, पड़ोस के लोग - सभी उपस्थित थे। इस बात पर एक बड़ी चर्चा छिड़ गई कि इस बारे में क्या किया जाना चाहिए। आकलन से क्रियाशीलता की यात्रा शुरू हो चुकी थी। आपस में बातचीत और भागीदारी समस्या को पहचानने की दिशा में बड़ी महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ थीं। एक बार समस्या के पहचान में आ जाने के बाद उसे सबके द्वारा "स्वीकार" किया गया और फिर समस्या का समाधान करने की रणनीतियाँ बनाई जाने लगीं।

अब असर या ए.एस.ई.आर. - द ऐनुअल स्टेटस ऑफ ऐजुकेशन रिपोर्ट (वार्षिक शिक्षा स्तर रिपोर्ट) - के नाम से जानी जाने वाली पूरी प्रक्रिया सुलतानपुर गाँव के इस अनुभव जैसे सैकड़ों अनुभवों पर आधारित थी। ए.एस.ई.आर. का उद्देश्य स्कूली शिक्षा और सीखने के ग्राम रिपोर्ट कार्डों से बहुत मिलता-जुलता है। 2005 में भी, हम देख सकते थे कि स्कूल में नामांकनों के स्तर काफी ऊँचे थे। भारत के ऊँचे नामांकन स्तरों का श्रेय उन पालकों को जो शिक्षा की माँग कर रहे थे और उन सरकारों को देना पड़ेगा जो स्कूल मुहैया करवा रही थीं। स्कूल जाना एक देखी जा सकने वाली गतिविधि है। वे बच्चे जो स्कूल में नहीं थे उन्हें पहचानना आसान था। कुल मिलाकर, सार्वभौमिक नामांकन का लक्ष्य सबको स्पष्ट और प्रगट है - हर बच्चे को स्कूल जाना ही चाहिए।

पर नामांकन स्तरों के बढ़ने के साथ, इस बारे में सोचना महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि स्कूलों के भीतर क्या हो रहा है। इस बारे में सोचना कि जितने समय तक बच्चा स्कूल में रहता है तब तक हर साल उसके सामर्थ्य में कितना "मूल्य" जोड़ा जा रहा है। समय आ गया है कि स्कूल जाने भर के परे जाया जाए, यह समझने के लिए कि बच्चे वास्तव में क्या सीख रहे हैं। स्कूल जाने के विपरीत, सीखना कहीं ज्यादा अदृश्य होता है - यह दीवारों के पीछे और कक्षाओं के भीतर होता है। निरक्षर और स्कूल न गए हुए माता-पिता और परिवार के सदस्य सीखने के काम को "विशेषज्ञों" और शिक्षित लोगों के हाथ में छोड़ देते हैं। उन्हें नहीं लगता कि सीखने में जो-जो बातें शामिल होती हैं वे उन्हें समझ सकते हैं, या यह कि वे अपने बच्चों के सीखने को कैसे सुधार सकते हैं। तो यदि एक देश के रूप में हम चाहते हैं कि "हर बच्चा अच्छे से सीखे" तो हमें "सीखने" से जुड़े रहस्य पर से पर्दा हटाना जरूरी है। हमें ऐसे तरीकों की जरूरत है जहाँ हम लोगों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ सकें ताकि बच्चों की सीखने की प्रक्रिया ज्यादा दिखाई देने वाली, ज्यादा समझी जा सकने वाली प्रक्रिया बन सके और ऐसी गतिविधियों का प्रदर्शन करें जिनमें साधारण माता-पिता और परिवार के सदस्य, पड़ोसी और युवा शामिल हो सकें। ग्राम रिपोर्ट कार्ड बनाने की प्रक्रिया की आकलन गतिविधि का उद्देश्य विभिन्न वर्गों के लोगों को एक साथ लाना था ताकि वे स्थिति को समझ सकें और उपयुक्त कदम उठा सकें।

2004 के आसपास, राष्ट्रीय स्तर पर, दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। पहली, उस समय की नई यूपीए सरकार ने हर क्षेत्र के लिए निर्धारित लागतों से परिणामों तक पहुँचने की बात करना शुरू की। सामाजिक क्षेत्र के अधिकांश कार्यक्रमों के लिए तब तक सारा ध्यान परिणामों पर होने के बजाय सिर्फ निवेशों और सेवाओं की आपूर्ति पर था। दूसरी, और ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात थी कि प्राथमिक शिक्षा पर 2 प्रतिशत का शिक्षा उप-कर लगा दिया गया। इन दोनों कारणों की वजह से नागरिकों के लिए यह जरूरी प्रतीत हुआ कि वे अपना ध्यान शिक्षा क्षेत्र के परिणामों की तरफ मोड़ें।

2005 से, यानी पिछले आठ सालों से, ए.एस.ई.आर. बच्चों के स्कूल जाने और सीखने की स्थिति को समझने के लिए नागरिकों का एक राष्ट्रव्यापी प्रयत्न रहा है। ग्राम स्तर पर आकलन से क्रियाशीलता की ओर ले जाने वाली गतिविधि की तरह ही, ए.एस.ई.आर. का लक्ष्य इसी तरह की गतिविधियों को जिला व राज्य स्तर पर शुरू करना है। ए.एस.ई.आर. में "सीखने" का अर्थ बुनियादी पाठन और अंकगणित करना होता है। हम आधारभूत क्षमताओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं ताकि कोई निरक्षर माँ भी यह देख सके कि उसके बच्चे को ये चीजों कर सकने के लिए क्या करने की जरूरत है। ए.एस.ई.आर. का सर्वेक्षण देश के हर ग्रामीण जिले में हर साल किया जाता है। सरल उपकरणों के एक सामान्य समूह और एक सामान्य नमूना ढाँचे का इस्तेमाल करके प्रत्येक जिले में एक स्थानीय संगठन ए.एस.ई.आर. का संचालन करता है और फिर उससे प्राप्त हुई जानकारियों का प्रचार करता है। ए.एस.ई.आर. 2012 को देशभर के 500 से भी अधिक स्थानीय संस्थाओं और संगठनों तथा 25,000 से भी ज्यादा स्वयंसेवकों ने अंजाम दिया। सामूहिक रूप से वे 16,000 गाँवों, 300,000 से ज्यादा परिवारों और 600,000 से काफी ज्यादा बच्चों तक गए।

ग्राम रिपोर्ट कार्डों की प्रक्रिया की तरह ही ए.एस.ई.आर. भी बुनियादी रूप से इस धारणा पर आधारित है कि कुछ भी कदम उठाने से पहले हमें स्थिति को समझने की जरूरत है। स्थिति को समझने के लिए हमें जिज्ञासा की जरूरत है - हमें यह देखने की जरूरत है कि क्या कोई समस्या है। हमारे सामने जो सवाल हैं उनके जवाब देने के लिए हमें सरल तरीकों की जरूरत है। सरल उपायों और सरल तरीकों के माध्यम से सभी लोग इस प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं और काम कर सकते हैं। यदि हमें पता ही न हो तो हम कोई कदम नहीं उठा सकते। जानकारी होने पर ही हम अगले कदम और उपाय के बारे में सोच सकते हैं। चीजों को सुधारने के लिए सिर्फ सरकार पर निर्भर रहने से उन्हें सुधरने में बहुत वक्त लगेगा। गाँव में प्रधान जी और पालकों की भाँति ही, यह बेहद जरूरी है कि हम अपने बच्चों के भविष्य को सुधारने के लिए स्थिति को भाँपने, उसे समझने और फिर जरूरी कदम उठाने के काम में शामिल हों। कुछ लोग कहते हैं कि ए.एस.ई.आर. से उत्तरदायित्व के भाव का विस्तार हुआ है; हम कहते हैं कि ए.एस.ई.आर. से कुछ कर सकने की समझ, स्वामित्व का भाव और जिम्मेदारी की भावना पैदा होती है। ए.एस.ई.आर. का जन्म इसी तरह हुआ था और इसीलिए उसे साल दर साल किया जाता है।

1. असर या ए.एस.ई.आर. यानी एनुअल स्टेटस ऑफ ऐजुकेशन रिपोर्ट (वार्षिक शिक्षा स्तर रिपोर्ट)। विस्तृत रिपोर्ट www.asercentre.org पर उपलब्ध है।
2. इस मामले में 'हम' अर्थात, ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले 'प्रथम' के दल।

***रुक्मिणी** 1996 से 'प्रथम' के साथ हैं। वे अब ए.एस.ई.आर. सैण्टर का नेतृत्व करती हैं, जो 'प्रथम' की स्वायत्त, शोध और मूल्यांकन इकाई है। समुदायों और सरकारों के साथ सीधे तौर पर काम करते हुए उन्हें प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यक्रम क्रियान्वयन और आकलन का व्यापक अनुभव है। उन्हें बच्चों के लिए कहानियाँ सुनाना और लिखना बहुत पसन्द है। उनसे rukmini.banerji@pratham.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सत्येन्द्र त्रिपाठी*